वर्ष-1, अंक-2, जनवरी - मार्च 2024 E-ISSN : 2584-2900

भारतीय शिक्षा - समस्याऐं एवं समाधान

[1]राम प्रसाद रजक
शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र विभाग
[2]दिनेश मिश्रा
सहायक प्राध्यापक (शोध निर्देशक)
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय छतरपुर (म.प्र.)

शोधसार -

मानव आरंभिक काल से ही अपने विकास के लिए प्रयत्नशीन है। शिक्षा इसमें महत्वपूर्ण योगदान देती है' किंतु भारतीय शिक्षा प्रणाली व व्यवस्था में अनेक समस्याएँ तथा कमियॉ होने के कारण शिक्षा विकास में इतना सहयोग नहीं कर पाती यदि, समस्याओं तथा कमियों को जान लिया जाय तो उनका समाधान करके शिक्षा को अधिक उपयोगी और सार्वभौमिक बनाया जा सकता है, जैसे पाठ्यक्रम को रूचि उत्पन्न करने वाला व आकर्षक बनाना आदि है।

इन्हीं कारणों से शिक्षा की समस्याओं के संबंध में सोचना आवश्यक हो गया है ताकि- उनका समुचित समाधान ढूॅढ़ा जा सके। शिक्षा की गुणवत्तामें वृद्धि की जा सके उसे रोजगार परक बनाया जा सके।

प्रस्तावना -

शिक्षा एक परिवर्तन शील विषय है, जिसमें समय एवं परिवेश में परिवर्तन के साथ बदलाव आवश्यक है, एक शिक्षा प्रणाली तब तक ठीक- रहती है, जब जक वह लोगों के मानसिक व बौद्धिक स्तर के अनुकूल हो, जीवन स्तर के अनुकूल हो, जैसे है जीवन स्तर एवं मानसिक स्तर ऊपर उठता है, शिक्षा प्रणाली में भी उसी अनुरूप सुधार आवश्यक हे इसी उद्देश्य से शिक्षा में शोधों को प्रोत्साहन दिया जाता है यदि किसी कारणवश इसमें रूकावट आती है तो शिक्षा तात्कालिक अवश्यकताओं की पूर्ति करने में सक्षम नहीं होती है वह असफल हो जाती है उसमें अनेक दोष पैदा हो जाते हैं अत: इसमें सरकारी नियंत्रण आवश्यक होता है विभिन्न आयोगों तथा समितियों का गठन किया जाता है। जो अपनी जॉच के आधार पर सुधार के सुझाव प्रस्तुत करते हैं उनका अनुपालन करके शिक्षा को उपयोगी बनाने का प्रयास किया जाता है, किंतु कभी

वर्ष-1, अंक-2, जनवरी - मार्च 2024 E-ISSN : 2584-2900

किन्हीं सरकारों द्वारा शिक्षा का दुरूपयोग भी किया गया है इतिहास इस बात का साक्षी है कि अंग्रेजों ने भारत में अपनी सत्ता बरकरार रखने के लिए भारतीय शिक्षा प्रणाली पर प्रघात किया था।

शिक्षा की अवधारणा -

शिक्षा का अर्थ है ''सीखना'' विद्यालय में कक्षा में बैठकर बच्चों को ज्ञान दिया जाता है, जिसमें उनके ज्ञान में वृद्धि हो तथा बुद्धि का परिमाजन हो जिससे वह भविष्य में अच्छा आचरण करे तथा देश और समाज के विकास में अपना योगदान दे।

दूसरे अर्थ में शिक्षा वह व्यापक प्रक्रिया है जो लगातार चलती रहती है इसकी कोई उम्र सीमा या अन्य बंधन नहीं होते मनुष्य किसी भी अवस्था में सीख सकता है। इसे ही शिक्षा कहा जाता है। यह आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है यह अवश्य है कि उम्र अधिक होने पर अपेक्षाकृत कम उम्र के सीखने की क्रिया मंद हो जाती है।

उम्र बढ़ने के साथ व्यक्ति अपने अनुभवों को व्यक्त करता है सामाजिक आध्यात्मिक तथा प्राकृतिक वातावरण से सामजस्य स्थापित करने का प्रयास करता है, उनसे वह सीखता है, यह भी शिक्षा ही है। गाँधी जी के अनुसार शिक्षा से तात्पर्य बालक तथा व्यक्ति के शरीर मन तथा आत्मा की सर्वोत्तमता का सर्वांगीण प्रकटीकरण है।

इस प्रकार हम शिक्षा का अर्थ सीखने से लेते है जो व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करती है ताकि वह समाज, देश तथा विश्व का अधिकतम कल्याण कर सके, तथा स्वयं अच्छा जीवन बिता सके।

शिक्षा की विशेषताएँ -

1. शिक्षा सीखने की क्रिया है।
2. शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है।
3. यह निरंतर चलती रहती है।
4. शिक्षा समाज की प्रगति का आधार है।
5. शिक्षा त्रिमुखी प्रक्रिया है।

वर्ष-1, अंक-2, जनवरी - मार्च 2024 E-ISSN : 2584-2900

6. शिक्षा व्यक्तित्व का विकास करती है।
7. शिक्षा मानवता का विकास करती है।
8. यह अच्छे गुणों का संचार करती है।
9. शिक्षा अज्ञानता को नष्ट करती है।
10. यह मनुष्य को देवत्व की श्रेणी में पहु चाती है।

शिक्षा के उद्देश्य -

शिक्षा का उद्देश्य बालक का सर्वागीण विकास करना है। किंतु इसका प्रमुख उद्देश्य ज्ञार्नाजन करना है। ताकि वह एक श्रेष्ठ जीवन यह मनुष्य के जीवन का अति महत्वपूर्ण कार्य है अत: इसके उद्देश्य बहु त व्यापक है कुछ प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार है।

1. सार्व भौमिक उद्देश्य - शिक्षा के यह उद्देश्य देश काल एवं स्थान के अनुसार एक रहते है, यह मनुष्य में दया प्रेम, अहिंसा, सामाजिकता आदि गुणों का विकास करते हैं।
2. ज्ञानार्जन उद्देश्य- शिक्षा का मुख्य उद्देश्य ज्ञानार्जन करना है, व्यक्ति का अज्ञान दूर कर उसको ज्ञानवान- बनाना है, ताकि वह समाज में एक अच्छा जीवन जी सके, अरस्तु के अनुसार '' ज्ञान ही शक्ति है।
3. बौद्धिक विकास- शिक्षा व्यक्ति का बौद्धिक विकास करती है, एक स्वस्थ मन का निर्माण करती है, ताकि वह निर्णय ले सके कि क्या अच्छा है, और क्या बुरा है, क्या करने लायक है और क्या नहीं,
4. चारित्रिक विकास- शिक्षा मनुष्य का चारित्रिक विकास करती है ताकी वह दुनिया में व्यवहार करना सीख सके, किसके साथ कैसा व्यवहार किया जाना चाहिए। चरित्र वस्तुत: मनुष्य के विवेकपूर्ण व्यवहार से पता चलता है।
5. सांस्कृतिक विकास - शिक्षा मनुष्य का सांस्कृतिक विकास करती है जिससे वह श्रेष्ठ धर्म अपना कर श्रेष्ठ विचारों का अनुगमन कर अपने कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सके, अच्छा खान-पान रहन- सहन, तथा जीवकोपर्जन कर सके, सामाजिक मूल्य तथा श्रेष्ठ मान्यताओं का विकास कर सके।

वर्ष-1, अंक-2, जनवरी - मार्च 2024 E-ISSN : 2584-2900

6. अध्याभिव्यक्ति उद्देश्य - व्यक्ति स्वयं जैसा है अपने मूलरूप में उसे व्यक्त कर सके इसकी उसे पूर्ण स्वतंत्रता होनी चाहिए प्रकृति ने मनुष्य को स्वतंत्र उत्पन्न किया है अत: उसकी स्वतंत्रता का हनन प्राकृतिक नियमों के विरूद्ध है शिक्षा व्यक्ति में ऐसी क्षमता पैदा करती है कि वह अपनी विचार धारा को प्रकट कर सके।
7. नेतृत्व का विकास - शिक्षा व्यक्ति की नेतृत्व क्षमता का विकास करती है जिससे वह श्रेष्ठ व्यक्ति, गुण, तथा विचारों को प्रोत्साहित कर समाज में अच्छे वातावरण का निर्माण कर स्वयं को श्रेष्ठ मानव प्रति पारित कर सके।
8. वसुधैव कुटुम्बक्कम की भावना का विकास- शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को सरल तथा सहयोगी, सहचर्य भाव का बनाने का है कि वह सभी प्राणियों की निष्कपट भाव से मदद कर सके।
9. दायित्वों का निर्वहन- शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को अपने कार्य को अच्छे ढंग से पूरा करने योग्य बनाने का है। जिससे वह अपने सामाजिक, धार्मिक तथा व्यक्तिगत दायित्वों को अच्छी तरह पूर्ण कर सके।
10. राष्ट्रीयता का विकास- शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति में राष्ट्रीयता, देश प्रेम की भावना का विकास करना है ताकि वह देश तथा समाज के लिए त्याग वह बलिदान देने के लिए तत्पर हो सके आवश्यकता पड़ने पर देश की रक्षा कर सके।

भारतीय शिक्षा प्रणाली -

भारत एक सर्वप्रभुत्व सम्पन्न लोकतांत्रिक गणराज्य है इसमे शिक्षा के उद्देश्य बहुत व्यापक है किंतु यहाँ की शिक्षा प्रणाली किताबी ज्ञान व वस्तु के बोझ को बढ़ाती है वर्तमान में तीन वर्ष पूर्व प्राथमिक शिक्षा, पॉच वर्ष प्राथमिक शिक्षा तीन वर्ष माध्यमिक शिक्षा तथा दो वर्ष हाई स्कूल दो वर्ष हायर सेकेन्डरी, तीन वर्षीय स्नातक तथा दो वर्ष स्नातकोत्तर शिक्षा मौजूद है इस शिक्षा प्रणाली में समय-समय पर परिवर्तन भी किया गया किंतु वह अपर्याप्त रहा है। देश की बढ़ती आवश्यकताओं को पूर्ण करने में अक्षम रहा है। पाठ्यक्रम में उद्यमिता विकास का अभाव है पढ़-लिखकर छात्र केवल नौकरियों पर निर्भर हो जाते हैं, उनमें स्वउधम करने की प्रवृति का

वर्ष-1, अंक-2, जनवरी - मार्च 2024 E-ISSN : 2584-2900

विकास करने में शिक्षा असफल रही है आधी शिक्षा में ही छात्र पलायन कर जाते हैं। या परीक्षा के समय पर ही पढ़ाई करते है, वे पूर्ण ज्ञान को प्राप्त नहीं कर पाते हैं।

भारतीय शिक्षा की समस्याएं -

भारतीय शिक्षा में वैदिक काल से लेकर आज तक कई उतार-चढ़ाव देखने को मिले हैं चाहे वह उत्तर वैदिक काल हो, बौद्ध काल हो, मुस्लिम काल य विदेश काल स्वतंत्र भारत में हमारे राष्ट्रीय नेताओं ने शिक्षा व्यवस्था में सुधार करे का प्रयास किया संविधान को धारा 45 में प्राथमिक शिक्षा हेतु निर्देश हेतु निर्देश है कि राज्य का अनिवार्य कर्तव्य है, कि वह देश के नागरिकों को शिक्षा उपलब्ध कराये।

आज भारतीय शिक्षा में अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो चुकी है इनमें से कुछ इस प्रकार हैं-

1. शिक्षा की अनिवार्यता नहीं
2. प्रवेश की समस्या
3. पाठ्यक्रम की समस्या
4. शिक्षण विधियों की कमियाँ
5. दोषपूर्ण परीक्षा प्रणाली
6. एक रूपता का अभाव
7. भाषा की समस्या
8. धार्मिक सहिष्णुता की कमी
9. शैक्षिक अवसरों की असमानता
10. सामाजिक समस्याएँ
11. राजनैतिक समस्याएँ
12. राष्ट्रीय एकता की कमी
13. मूल्य परक शिक्षा का अभाव
14. गरीबी, जनसंख्या वृद्धि
15. रोजगारोन्मुखता का अभाव
16. आवागमन की सुविधाओं की कमी

वर्ष-1, अंक-2, जनवरी - मार्च 2024 E-ISSN : 2584-2900

भारतीय शिक्षा में सुधार के उपाय -

भारत जैसे विशाल देश के लिए एक अच्छी सवभौमिक शिक्षा व्यवस्था की आवश्यकता है इसमें निम्न लिखित सुधार आपेक्षित हैं-

1. बुनियादी ढाँचे में सुधार
2. माध्यमिक शिक्षा का सशक्ती करण
3. उच्च शिक्षा में सुधार
4. शिक्षा के प्रति जागरूकता
5. शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार
6. शिक्षण विधियों में सुधार
7. कौशल विकास पर बल
8. सस्ती शिक्षा की उपलब्धता
9. माध्यमिक शिक्षा का व्यावसायी करण
10. शिक्षा सुधार समिति का गठन
11. व्यावसायिक शिक्षा का प्रसार
12. योग्य शिक्षकों का चयन
13. पाठ्यक्रम में सुधार
14. गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा दी जाय
15. शैक्षिक सुविधाओं का विस्तार
16. शिक्षा का वैश्वीकरण किया जाय
17. तकनीकी विकास आवश्यक

निष्कर्ष -

उपरोक्त अध्ययन द्वारा हम निष्कर्ष रूप में यह कह सकते हैं, भारतीय शिक्षा प्रणाली में सुधार आवश्यक है, भारत जैसे विशाल देश में शैक्षिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए ऐसी शिक्षा प्रणाली विकसित की जानी चाहिए जो सार्वभौमिक तथा सर्वउपयोगी हो वह देश वासियों में

वर्ष-1, अंक-2, जनवरी - मार्च 2024 E-ISSN : 2584-2900

ऐसी दक्षताएँ विकसित कर सके कि वे अपनी योग्यता का विकास कर विकास की मुख्य धारा में सम्मलित होकर तीव्र विकास में सहयोगी बन सकें।

देश में व्याप्त समस्याओं तथा विकास के मार्ग की अडचनों को दूर करने के लिए शिक्षा में सुधार आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची -

1. खरे डॉ. राजीव - ''भारत में शिक्षा स्थिति समस्याएँ एंव मुद्दे ''
2. सारस्वत कुल दीप - ''भारत में शिक्षा चिन्ताएँ एव दृष्टि''

SKU SHODH SANCHAR शोध संचार